बंगाल के नवाब एवं अंग्रेज (प्लासी का युद्ध, 1757)

प्राचीन काल से ही बंगाल आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। 18वीं शताब्दी के शुरुआत में मुगलों के पतन के दौरान बंगाल भारत का एक बड़ा स्वतंत्र प्रांत के रूप में उभरकर उभरा। औरंगजेब के शासनकाल के अंतिम वर्षों में मुर्शिद कुली खां को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया गया था।

बंगाल के नवाब :— मुर्शिद कुली खां
↓
शुजाउद्दीन खां
↓
सरफराज खां
↓
अलीवर्दी खां
↓
सिराजुद्दौला

प्लासी की लड़ाई के कारण :—

कारण :— (i) बंगाल की महत्वपूर्ण आर्थिक स्थिति — बंगाल भारत का सबसे उपजाऊ और धनी प्रांत था। इसके उद्योग-धंधे और व्यापार बहुत विकसित थे। इससे EIC और उसके कर्मचारियों के व्यापारिक हित जुड़े थे। EIC के लिए इस पर नियंत्रण आवश्यक था।

(ii) शाही फरमान और दस्तक का दुरुपयोग — 1717 में मुगल सम्राट के एक शाही फरमान द्वारा अंग्रेजों को विशेषाधिकार मिले थे जिसके अनुसार कंपनी को बिना कर चुकाए बंगाल से अपने सामान का आयात-निर्यात करने की आजादी थी और इन मालों की आवाजाही का पास या दस्तक जारी करने या रखने का उसे अधिकार था। कंपनी के कर्मचारियों को भी निजी व्यापार की छूट थी हालांकि उन्हें फरमान की सुरक्षा प्राप्त न थी। भारतीय व्यापारियों को भी कर चुकाने पड़ते थे।

इस व्यवस्था से एक ओर बंगाल की सत्ता को राजस्व की हानि होती थी. वहीं दूसरी ओर कंपनी को दस्तक जारी करने का जो अधिकार मिला था, इसका दुरुपयोग कंपनी के कर्मचारी अपने निजी व्यापार पर भी कर न चुकाने के लिए करते थे।

(iii) किलेबंदी — सिराजुद्दौला से आज्ञा लिए बगैर कंपनी ने कलकत्ता की किलाबंदी शुरू कर दी क्योंकि उसे तब चंद्रनगर में जमे फ्रांसीसियों के साथ युद्ध की आशंका थी। सिराजुद्दौला ने इसे अपनी प्रभुता पर चोट समझा।

(iv) अलीनगर संधि का उल्लंघन — आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष के कारण अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों की बस्ती चंद्रनगर पर आक्रमण कर दिया। इस अभियान के पश्चात्, नवाब ने अंग्रेजों पर अलीनगर की संधि भंग करने का आरोप लगाया।

अंग्रेजों की विजय के कारण –

(i) दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों के साथ अंग्रेजों के संघर्षों से प्राप्त अनुभव का बंगाल में प्रयोग।

(ii) नौसेना

(iii) कूटनीति एवं षड्यंत्र – (a) घसीटी बेगम (सिराजुद्दौला की मौसी) का दीवान राजवल्लभ एवं पूर्णिया का गवर्नर शौकतजंग सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यंत्रपूर्ण कार्रवाई कर रहे थे।

(b) अंग्रेज नवाब के दरबार के प्रमुख लोगों के साथ साजिश और गद्दारी का ताना-बाना बुनते रहे। इनमें प्रमुख थे – मीर जाफर जो मीर बख्शी के पद पर था, मानिकचंद जो कलकत्ता का अधिकारी था, अमीचंद जो एक धनी व्यापारी था, जगतसेठ जो बंगाल का सबसे बड़ा बैंकर था और खादिम खान जिसकी कमान में नवाब की सेना का एक बड़ा भाग था।

(c) अंग्रेजों एवं मीर जाफर के बीच एक गुप्त संधि हुई जिसके द्वारा यह निश्चित किया गया कि सिराजुद्दौला के स्थान पर अंग्रेजों की सैन्य शक्ति के द्वारा मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया जाएगा और भविष्य में इसे सैन्य सहायता भी दी जाएगी। इसके बदले मीर जाफर कंपनी को किलेबंदी की अनुमति देगा और फ्रांसीसियों की कोठियों को भी सौंपेगा।

(iv) कलकत्ता की अंग्रेजों द्वारा विजय एवं अलीनगर की संधि — अंग्रेजों की कलकत्ता में किलेबंदी के खिलाफ सिराजुद्दौला ने सैन्य कार्रवाई का निर्णय लिया। नवाब ने कासिमबाजार किला और फोर्ट विलियम किले पर विजय प्राप्त की। इससे बंगाल में अंग्रेजों की स्थिति दयनीय हो गयी। फलतः क्लाइव एवं वाट्सन के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना को कलकत्ता पर अधिकार के लिए भेजा गया।

16 अक्टूबर 1756 को क्लाइव एवं वाट्सन के नेतृत्व में सेना ने कलकत्ता पर पुनः विजय प्राप्त करने हेतु आगे बढ़ी। कलकत्ता का प्रभारी मानिकचंद अंग्रेजों से मिल गया। अंग्रेजों ने बिना किसी बड़े युद्ध के 2 जन. को कलकत्ता पर अधिकार कर लिया।

सिराजुद्दौला एवं अंग्रेजों के बीच अलीनगर की संधि हुई —

(a) अंग्रेजों की सभी शर्तें मान ली गईं।
(b) अंग्रेजों को पुरानी व्यापारिक सुविधाएँ प्रदान कर दी गईं।
(c) क्षतिपूर्ति के रूप में अंग्रेजों को भारी धनराशि मिली।
(d) कलकत्ता की किलेबंदी का भी अधिकार मिला।
(e) यह संधि दोनों पक्षों के लिए दिखावा थी —
- सिराजुद्दौला को दरबारी षड्यंत्रों की भनक मिल गई थी। साथ ही साथ अब्दाली के बंगाल पर आक्रमण का भी खतरा बढ़ रहा था।
- अंग्रेजों को भी यह लग रहा था कि कहीं फ्रांसीसी और नवाब एक न हो जाएँ।

(v) फ्रांसीसियों की बस्ती चंद्रनगर पर अंग्रेजों की विजय – यह नवाब की महत्वपूर्ण राजनीतिक हार थी क्योंकि चंद्रनगर पर अधिकार कर लेने के बाद अंग्रेजों के बंगाल में मुख्य यूरोपीय प्रतिद्वंद्वी समाप्त हो गए।